

## बून्दनि फुहार ( १९८ )

सांवण की सुहानी आई बहार झूला झूलो।  
बादल बरसाते बून्दनि फुहार झूला झूलो॥

जंह तंह हरयाली छाई संदेशा प्रेम का लाई  
घटाएं उमड़ती आई मोरों ने जै धुनि है गाई  
करते भंवरा गुंजार झूला झूलो॥

लता द्रुमो से लपटि रही ठण्डी सुगंधि समीर बही  
हरी हरी ओढनी ओढ लई भई है धरती मोद मई  
पपीहा पी पी पुकार झूला झूलो॥

अजब है वृन्दावन शोभा निरखि सुर मुनि नर मन लोभा  
वृक्षों में नई नई गोभा कैसी है माधुरी मोभा  
बहती यमुना की धार झूला झूलो॥

फूली है कदम की डारी झूल रहे प्रीतम ओ प्यारी  
उड़ते है पीताम्बर साड़ी सखी मिल कहती बलहारी  
जै जै युगल सरकार झूला झूलो॥

शोभा घन दामिनि ज्यों प्यारी मुदित भए निरखि बृजनारी  
नाचते देकर सब ताड़ी धुनी नूपुर किंकिण न्यारी  
मैगसि मोद अपार झूला झूलो॥